नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

No. of Printed Pages — 7

SS—26–Raj. Sah.

उर्ा माध्यमिक परीक्षा, 2013

SENIOR Secondary Examination, **2013**

राजस्थानी साहित्य

(RAJASTHANI SAHITYA)

समय : 3 $\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों सारू सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखे ।

(2) **सगला** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पडूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पडूत्तर देवौ ।

(7) उत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ढौड़ अंकित है ।

1. नीचै लिख्या गद्यावतरणां री सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) अेक आखर कैया बिनां ही रामजस सौ समझग्यो । आंख्या रा भाव-आंख्या में ही पढ़ लिया । देख्यौ कै कोई टाबर रै कमीज कोनी तो कोई रै जूत्यां कोनी तो कोई टोपी खातर उणमणो है । भूरी रै दो पुराणी साड़ी छोड़'र तीजी रौ नांव कोनी । अर आप रै किसी पौसाकां ? अेक पजामो अर कमीज, जिणां ने छुट्टी रै दिन धो'र सुकावै, पगां में टायरां री चप्पल ! टाबरां रौ औ हाल ! लिछमी-सी लुगाई और डोळ ! इतै दिनां में बोरिया बिखरग्या !

अथवा

अेक दिन स्वामी जी सोच्यौ अर फैसलो कर लीनो आदमी रौ आधो अंग लुगाई है, लुगाई नी सुधरसी तो घर नीं सुधरै; तो फेर लुगाई नै भी सुधारो । नारी रै सुधरणै री संस्था बणावणी घणी जरूरी है । फेर कांई हो ? स्वामी जी रौ आव्हान हो अर दूजी बिती ही बड़ी संस्था बणाली-दो संस्थावां बराबर रो खड़ी हो ली । 4

(ख) देस बदळ्यां सूं कांई आदमी रो मन बदळ जावै ? संस्कार, संस्कृति, खांणपांण, आदतां, वेशभूषा, मानतां, सोच, जिन्दगाणी रो तरीको । घणी बातां होवै जिकी आदमी रां खून मांय रची-बसी होवै । पीढ्यां बीत जावै पण अै बातां नीं बदळै । भारत सूं गिया लोग रैवता मॉरीशस में हा पण वारै मन में हिन्दुस्तान बसतो हो ।

अथवा

पण इण तरियां तो माया रा रूप गिणायां गिणीजै नहीं कठै लग रामाण करां ? मिनख जमारै नै सुधारण रौ कोई सीधो सो नुसखों बतावो । तो फेर सुणौ मिनख री सगळी गतविध रौ आधार है चितवणी । कथणी अरकरणी । मिनख जिनगाणी रो गाडी रा दो पैड़ा कथणी अर करणी । चितवणी है उणरो धुरो । धुरो अर दो पैड़ा ठीक-ठाक तो गाड़ी चालै सड़ाक-सड़ाक । 4

(ग) पीङ तनै अेकलै ने हुवै है ! जिकी बासतै तैं लगाई है उणमै सगळां सीज रह्यां है । ..... तूं सूरजड़ी नै जोव, जिकी लुगाई थारी जोगण ही ..... थारै नांव सूं हरी करस होवती ..... मोती लुटावती ..... बा किती सुलगती हुवैली ? जिकौ भाई लिछमण री तरियां तनै पूजतो ..... वो कितौ दुखड़ै में कळप रैयो है ।

अथवा

''जीवण अेक विचितर नाटक है । अेक-अेक घड़ी रौ भी किण नैं ई नहचौ नी ? सगळां सुख असल में दु:ख ईज है । सुख घड़ी-पोर रां है, अजर अमर है तो आ मिरत्यू ! मोत ! आं मिरत्यूं ई एक अमर सत्य है ! ..... इण पीड़ा रौ अनुभव ई साचो अनुभव । आपां सगळां जणां तो रमतिया हां । रमतिया बणावै जिकों ठा नी कद तोङ देवै ..... कियां तोङ देवै, आपां नी जाणां ।'' 4

2. 'सूरज री मोत' नामक कहाणी में लेखक गरीब वर्ग री संवेदना ने किण भांत दरसाई है । स्पस्ट करावो । 4

3. ''डाक्टर रौ ब्याव'' अेक सामाजिक समस्या प्रधान अेकांकी है । स्पस्ट करावो। 4

4. 'साहित्य सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है !' कियां ? स्पष्ट करावो । 4

5. उपन्यास रै तत्वां रै आधार माथै 'हूँ गोरी किण पीव री' नामक उपन्यास री समीक्षा करावो । 4

6. आधुनिक राजस्थानी काव्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य-धारा रौ परिचय दिरावो । 6

7. नीचै लिख्यां विसयां मांय सूं किणी अेक विसय माथै राजस्थानी भासा में निबन्ध लिखौ : 6

(i) राजस्थान रा लोक देवी-देवता

(ii) म्हारौ प्रिय कवि

(iii) भ्रस्टाचार अर निराकरण रा उपाय

(iv) म्हारी तीरथ जातरा ।

8. नीचै लिख्यां पद्यांसां री सप्रसंग व्याख्या करो : 5

(अ) जावौ नागणी नाग वेगौ जगाड़ौ,

अठै मांडसां आज बेहूं अखाड़ौ ।

रढीजै इसा मात आगै रढाळा,

चवीजै नहीं बोल, ऐ काळ-चाळा ॥

अथवा

तीतर बरणी चूँदड़ी नै काजळियां री कोर

प्रेम डोर में बंधती आवै रूपाळी गिणगोर

झूठी प्रीत जताती, झींणै घूघंट में सरमाती

ठगती आवै बिरख़ा बींनणी ।

(ब) अस रा असवार ऊजळां,

रह्यौ ऊजलै वागां

ऊजळी खागां

ऊजळै मनां

राखियो खत ऊजळौ,

पण असल रंगरेज आसरा

थें रंगियौ कसूंबल धरा-पोमचौ

बिना कर रंगियां । 5

अथवा

या चोफेरुं फीकी हांसी,

झूठां अपणापण की फांसी,

सै संझ्या चमनी को बझबो, कतनी बार मरु

म्हूँ कतनी बार मरूँ ?

9. 'राजिया रां सोरठां' री सरलतां अर सुबोधतां माथै प्रकास डालता थकां, उणमें निहित नीति-तत्व री विवेचना करो ! 5

10. 'वीर सतसई' में चित्रित वीर भावना माथै प्रकास डालो । 5

11. 'कुण देवैला हेलौ' कविता रौ भाव सौन्दर्य आपरा सबदां में लिखो । 5

12. काव्य री परिभाषा देवतां थकां उण रौ प्रयोजन समझावौ । 5

13. वेलियो छन्द रौ उदाहरण सागै परिचय दिरावौ । 5

14. अनुप्रास अलंकार री परिभासा उदाहरण सागै समझावौ । 5